www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 2, 9-11

Article ID: 153

लहसून की उन्नतशील खेती

धर्मराज मीना, डॉ. रविशंकर वर्मा[1], राजेश कुमार मीणा और राजमणि सिंह

[1]सहायक आचार्य, शोध विद्यार्थी उद्यान विज्ञान विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय), विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226025

लहसुन का उत्पत्ति स्थान दक्षिणी यूरोप माना जाता है और पूरे एशिया में खेती की जाने वाली एक लोकप्रिय बल्ब फसल है। इसका उपयोग कई व्यंजनों में मसाले के रूप में किया जाता है। इसमें उत्कृष्ट औषधीय गुण हैं। लहसुन का उपयोग खाने के साथ साथ कई तरह की बीमारियों को दूर करने में भी किया जाता है। हमारे देश में ज्यादातर राज्यों में लहसुन की खेती की जाती है। यह प्रोटीन, फास्फोरस, पोटेशियम आदि का समृद्ध स्रोत है। यह पाचन में मदद करता है; यह मानव रक्त में कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है। प्रमुख लहसुन उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब और हरियाणा हैं। इसका अधिकतम उत्पादन गुजरात और मध्य प्रदेश में होता है। लहसुन उत्पादन क्षेत्र और उत्पादकता समय के साथ लगातार बढ़ रही है।

जलवायु:

इसे विभिन्न प्रकार की जलवायु परिस्थितियों में उगाया जाता है। हालाँकि, यह बहुत गर्म या बहुत ठंडा मौसम में अच्छा उत्पादन नहीं देता है। यह गर्मियों के साथ-साथ सर्दियों में भी मध्यम तापमान पसंद करता है। बल्ब बनने के लिए छोटे दिन बहुत अनुकूल होते हैं। इसे एमएसएल से 1000 से 1300 मीटर की ऊंचाई पर अच्छी तरह से उगाया जा सकता है।

उपयुक्त मिट्टी:

इस फसल के लिए दोमट मिट्टी बहुत उपयुक्त मानी जाती है। इसकी खेती बलुई दोमट से लेकर चिकनी मिट्टी तक की जा सकती है। मिट्टी, जिसमें कार्बोनिक पदार्थ मात्रा के साथ-साथ जल निकासी की अच्छी सुविधा होनी चाहिए, इस फसल के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। रेतीली या ढीली भूमि में इसके कंदों की वृद्धि संभव नहीं है, जिससे उपज कम होती है। लहसुन उगाने के लिए मिट्टी का पीएच 6.0 से 7.5 के बीच होना चाहिए। लहसुन के इष्टतम जड़ विकास के लिए फास्फोरस की भी आवश्यकता होती है। स्वस्थ बल्ब निर्माण के लिए पर्याप्त पोटैशियम है अद्वितीय उपचार और स्वाद के लिए सल्फर की आवश्यकता होती है।

लहसुन की उन्नत किस्में:

- एग्रीफाउंड व्हाइट
- यमुना व्हाइट
- एग्रीफाउंड पार्वती
- गोदावरी
- श्वेता
- फुले बसवंती

प्रवर्द्धन:

लहसुन प्रवर्द्धन क्लोव द्वारा किया जाता है। रोग और चोट रहित स्वस्थ क्लोव या कंद का उपयोग बुवाई के लिए किया जाना चाहिए और एक हेक्टेयर रोपण के लिए लगभग 150 से 200 किलोग्राम/एकड़ क्लोव की आवश्यकता होती है। इन्हें डिबलिंग या फरो में बोया जाता है।

- **डिब्बलिंग:**

खेत की सिंचाई के लिए सुविधाजनक छोटे-छोटे भूखंडों में बांटा जाता है। क्लोव को 5 से 7.5 सेमी गहरा रखा जाता है, जिसके बढ़ते सिरे ऊपर की ओर होते हैं। उन्हें एक दूसरे से 7.5 सेमी की दूरी पर तथा 15 सेमी की पंक्तियों दूरी पर रखा जाता है और फिर ढीली मिट्टी से ढक दिया जाता है।

- **ट्रफ रोपण:**

हाथ से या कॉटन ड्रिल से 15 सें.मी. से कुंड कैसे बनाएं। इन खाइयों में क्लोव को हाथ से 7.5 से 10 सेमी की दूरी पर गिराया जाता है। उन्हें हल्की ढीली

मिट्टी से ढक दिया जाता है और हल्की सिंचाई दी जाती है।

बुवाई का समय:

लहसुन पैदावार बढ़ाने के लिए उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में अक्टूबर-नवंबर महीना उपयुक्त है। जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी बुवाई मार्च और अप्रैल के महीने में करना उचित रहता है।

उर्वरकों का प्रयोग:

अंतिम जुताई के दौरान लगभग 25 टन/हेक्टेयर गोबर की खाद 60 किग्रा/हेक्टेयर नाइट्रोजन और 50 किग्रा/हेक्टेयर फॉस्फोरस और 50 किग्रा/हेक्टेयर पोटाश बेसल खुराक के रूप में डालें। रोपण के 45 दिनों के बाद, 60 किग्रा/हेक्टेयर नाइट्रोजन को फिर से छिटकवां विधि से डालें।

सिंचाई:

पहली सिंचाई बुवाई के बाद की जाती है और फिर मिट्टी की नमी की उपलब्धता के आधार पर हर 10 से 15 दिनों में खेत की सिंचाई की जाती है। बढ़ते मौसम में नमी की कमी नहीं होनी चाहिए, नहीं तो बल्बों का विकास प्रभावित होगा। दक्षिण भारत की पहाड़ियों में, वे ज्यादातर बारानी फसल के रूप में उगाए जाते हैं।

निराई गुड़ाई:

पहली निराई गुड़ाई बुवाई के एक महीने बाद कुदाल से की जाती है। मिट्टी को ढीला करने और बड़े और अच्छी तरह से भरे हुए बल्बों को स्थापित करने में मदद करने के लिए दूसरी निराई पहली (बुवाई से लगभग ढाई महीने) के एक महीने बाद की जाती है। फसल को बाद की अवस्था में निराई या गुड़ाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे तने और रखरखाव की गुणवत्ता को नुकसान हो सकता है।

फसल सुरक्षा:

कीट:

- **थ्रिप्स:**

उपचार: नीम के तेल का 1 से 3% छिड़काव करें। रोपण के 45, 60, 75वें दिनो के बाद क्रमश 10%नीम बीज के रस छिड़काव करें। 10 लीटर पानी में 300 मिली दसकव्य और 30 मिली नीलगिरी का तेल मिलाकर 15 दिन में तक 3 बार स्प्रे करें।

- **सफेद निमेटोड:**

उपचार: ग्रीष्मकालीन जुताई से मातृ कीट और कोकून को नियंत्रित किया जा सकता है। खेत में अप्रैल-मई की रात में लाइट ट्रैप लगाए जा सकते हैं। प्रातः काल भृंगों को हाथ से नष्ट करने के लिए। तीसरे चरण के लार्वा जुलाई-अगस्त महीने, हाथ में लेकर नष्ट हो जाते हैं।

रोग:

- **स्मट रोग:**

उपचार: अग्निहोत्र राख (200 ग्राम अग्निहोत्र राख को 1 लीटर गोमूत्र में मिलाकर 15 दिनों तक 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें) एक महीने के अंतराल में 3 बार स्प्रे करें। 3% दसकव्य घोल का 15 दिन के अंतराल पर 3 बार छिड़काव करें।

मृदा जनित रोग:

- **लहसुन सड़न रोग:**

उपचार: ट्राइकोडर्मा विराइड @5 किग्रा/हेक्टेयर छिडकाव करें। स्यूडोमोनास फ्लोरासेंस 5 किग्रा/हेक्टेयर हेक्टेयर छिडकाव करें। रोग को नियंत्रित करने के लिए स्यूडोमोनास के घोल को जड़ में 7 दिनों तक हेक्टेयर छिडकाव करें। 5 टन मशरूम कम्पोस्ट खाद डालें इसके अलावा फॉस्फोबैक्टीरिया, एज़ोस्पिरिलम 5 किग्रा / हेक्टेयर 50 किग्रा अच्छी तरह से विघटित गोबर की खाद भूमि तैयार करते समय डालें।

फसल काटई:

लहसुन, चार से पांच महीने की अवधि की फसल है। जब पत्तियां पीली या भूरी हो जाती हैं और सूखने के लक्षण दिखाई देने लगती हैं, तो फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है। फिर पौधों को बाहर निकाला जाता है या देशी हल से उखाड़ दिया जाता है और छोटे बंडलों में बांध दिया जाता है जिसे बाद में खेत में या छाया में या 2-3 दिनों के लिए सुखाने के लिए रखा जाता है ताकि बल्ब सख्त हो जाएं और उनकी गुणवत्ता में सुधार हो। अच्छी तरह से उपचारित लहसुन के कंदों को एक सामान्य हवादार कमरे में 1 से $1^{1/2}$ महीने तक रखा जा सकता है। अगर इसमें धूल का

धुआं दिया जाए तो बल्बों को 8 से 10 महीने तक स्टोर किया जा सकता है। उन्हें 32^0F पर 60% R.H के साथ भी संग्रहित किया जा सकता है।

उपज: 6 से 8 टन/हेक्टेयर है।